व्याख्यान 2*

आधुनिकीकरण तथा वैश्वीकरण के बीच बाल्यावस्था

सबसे पहले आधुनिक बाल्यावस्था व युवावस्था के बारे में चन्द शब्दचित्र। प्रत्येक आधुनिक समाज, और अन्ततः समूचे जगत ने, बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम के औचित्य तथा इस काम को निर्धारित करने के सामाजिक बनाम पारिवारिक अधिकार पर जोरदार बहस को अनुभव किया है। परम्परा तथा अब तक बड़े पैमाने पर कायम आवश्यकता ने काम के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया था। पर आधुनिकता ने शिक्षा का दबाव डाला और अकसर बाल सुलभ भोलेपन और संवेदनशीलता का तर्क देकर काम का विरोध किया। यह कहा गया कि काम न केवल बच्चों के लिए नुक्सानदेह है बल्कि व्यक्ति तथा सम्पूर्ण समाज की भावी सम्भावनाओं के लिए भी महँगा सिद्ध होगा। यह चर्चा हास्यास्पद हदों तक पहुँची, जिससे पता चलता है कि यह नवाचारी विचार दरअसल कितना चुनौतीपूर्ण था। फ़्रांस में 1841 में बाल श्रम को सीमित करने वाले प्रथम कानून के पारित होने के पहले, 1830 के दशक में खूब बहस हुई। कारखानों के मालिकों ने बारह वर्ष से कम आयु के बच्चों के काम को आठ घण्टों तक सीमित करने का विरोध यह तर्क देकर किया कि यह वयस्कों के कार्य दिवस से मेल नहीं खाएगा। तब तक किसी में भी यह तर्क करने का दुस्साहस नहीं था कि छोटे बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम को पूरी तरह से खत्म ही कर देना चाहिए, अतः बच्चों के काम के समय को वयस्कों के हिसाब से संगत बनाने का प्रश्न उस समय गम्भीर लगा होगा। जे.जे. बोरकार्ट (J. J. Bourcart) नामक सुधारक ने सुझाया कि बच्चों की सात या आठ घण्टों की दो पारियाँ आयोजित की जा सकती हैं। इससे कारखानों में वयस्कों की समय-सारिणी में व्यवधान डाले बिना एक वास्तविक बदलाव हासिल हो सकता है और बच्चों की शिक्षा की कुछ

* पीटर एन. स्टर्न्स (Peter N. Stearns) की पुस्तक *Growing Up The History of childhood in a Global Context* से उद्धृत।

सम्भावना भी बन सकती है। कारखानों के मालिकों ने इस विचार को कल्पनाशील मानते हुए इसका स्वागत किया : बच्चों के काम को वयस्कों के काम से अलग बनाने की कल्पना तो करो! क्या कमाल का विचार है! और इस प्रकार सर्वाधिक तरक्की-पसन्द लोगों में से कम से कम कुछ सैद्धान्तिक रूप से सुधार के विचार से सहमत होने लगे।[1]

1880 के दशक में जर्मनी में, कुशल और अधिक अनुभवी कामगार अपने अकुशल साथियों की खिल्ली इस बात पर उड़ाया करते थे कि उन्हें यह तक पता नहीं था कि वे बच्चे पैदा करने को कैसे रोकें, जिससे उनका आर्थिक जीवन जितना कठिन था उससे भी अधिक दुरूह बन जाता था। इसके विपरीत कुशल कामगार उन उपायों से परिचित थे जिन्हें 'पेरिसीय उपाय'- या कंडोम- कहा जाता था, जो एक ऐसे युग में सम्भोग को प्रजनन से पृथक करता था जिसमें परम्परागत संख्या में बच्चे पैदा करने का कोई अर्थ नहीं रह गया था। यह वही समय था जब एक अकुशल कामगार, मॉरित्ज़ ब्रौमे (Moritz Bromme), ने बताया कि कैसे उसकी असन्तुष्ट पत्नी, एक कमरे के उनके भीड़-भाड़ भरे आवास में, अपने सातों बच्चों की देखभाल करते हुए यह बुदबुदाती थी कि काश उनमें से कुछ मर जाते।[2]

जब जापान ने 1872 में, पश्चिमी मॉडल का अनुसरण करते हुए तथा व्यापक शिक्षा की अपनी हालिया परम्परा को गढ़ते हुए, जन शिक्षा को अपनाया, तब उसने पाया कि इस नवाचार के साथ बालकों के विषय में अन्य नए विचार भी खिंचे चले आए। बेशक इनमें से कुछ पश्चिम से भी आयातित किए गए थे। जापानी विशेषज्ञों का दावा था कि पालकों को उनके बच्चों की सही देखभाल

---

[1] Colin Heywood, *Childhood in Nineteenth-Century France: Work, Health, and Education among the "Classes Populaires"* (Cambridge: Cambridge University Press, 1988); J. J. Bourcart, *De travail des jeunes ouvriers* (Paris, 1840).

[2] Moritz Bromme, *Lebensgeschichte eines modernen Fabrikarbieters* (Leipzig, 1905). Peter N. Stearns, *Lives of Labor: Work in a Maturing Industrial Society* (London: Holmes & Meier, 1975) भी देखें।

करने के लिए परामर्श तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता भी होगी– केवल सहजबोध और परम्परा पर्याप्त नहीं हैं, क्योंकि बालक नाजुक फूलों से होते हैं जिन्हें विशेष संरक्षण की जरूरत होती है; कि उनके लिए खास खेल के मैदान बनाने होंगे ताकि बाल गतिविधियाँ आयोजित की जा सकें, अन्यथा विकासात्मक लक्ष्य हासिल नहीं किए जा सकेंगे; और अन्य संस्थाएँ, जैसे किशोर अपराधियों के लिए विशेष कानून व अदालतें भी अत्यावश्यक हैं, ताकि वे बाल्यावस्था की विशेष आवश्यकताओं व संवेदनशीलताओं को परिलक्षित कर सकें, पथभ्रष्ट बाल्यावस्था की भी। दूसरे शब्दों में, यह प्रतीत होता है कि एक प्रमुख परिवर्तन ने बाल्यावस्था क्या है सम्बन्धी व्यापक विचारों को ही नए सिरे से ढाल दिया।[3]

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमरीका के कई उद्योगीकृत होते समाजों में चिकित्सकों ने युवा, अधिकाँशतः मध्यवर्गीय महिलाओं में, एक नया रोग पाया : पूरा खाना खाने से इन्कार करना, जिसे एनोरैक्सिया नर्वोसा (anorexia nervosa) कहा जाता है। इस बात पर कुछ विवाद है कि यह रोग कितना नया है : सम्भव है कि पूर्ववर्ती समाजों की युवतियों में भी धर्म के नाम पर कठोर व्रत करना इसी रोग का एक रूप रहा हो। परन्तु लगता है कि आधुनिक एनोरैक्सिया शुरुआत में आधुनिक किशोरीपन से जुड़े तनावों व प्रतिबन्धों के, जिसमें पालकों के प्रेम तथा दखलन्दाजी के नए स्तर शामिल थे, अप्रत्यक्ष विरोध के रूप में फैला होगा। यह तब और फैला जब सौन्दर्य के मानक भी छरहरेपन पर सख्ती से बल देने लगे। अनेक बालिकाओं का अपने शरीर को लेकर आत्मविश्वास टूटा, और वे तमाम सबूतों के बावजूद स्वयं को भयानक रूप से मोटा मानने लगीं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एनोरैक्सिया अनेक समाजों में फैलता नजर आया। पैसिफिक द्वीप में टेलिविजन तथा पाश्चात्य मीडिया के आगमन का एक आरम्भिक प्रभाव था एनोरैक्सिया (क्षुधा का अभाव) तथा ब्यूलिमिया (अत्यधिक क्षुधा), इस कारण

[3] Brian Platt, " Japanese Childhood, Modern Childhood," *Journal of Social History* 38 (Summer 2005): forthcoming.

क्योंकि स्थानीय किशोरियाँ टी.वी. पर परोसे जा रहे मानकों से स्वयं के शरीरों की तुलना करने लगी थीं। अर्थात आधुनिक युवावस्था का मतलब नए अवसर तो था, पर साथ ही महत्त्वपूर्ण नए तनाव और समस्याएँ भी था।[4]

सन 2000 में एक अमरीकी शान्ति दल की शिक्षिका पूर्वी रूस के एक ऐसे गाँव में काम कर रही थी जिसने पहले कभी किसी अमरीकी को देखा ही नहीं था, और जहाँ न कम्प्यूटर था न इंटरनेट कनैक्शन। अपने इस अलगाव के बावजूद, उनकी छात्राओं में संसार की सबसे सुन्दर महिला की एक सुनिश्चित छवि थी, और उन्होंने ब्रिटनी स्पियर्स को चुना था। उसी वर्ष, मैडागास्कर की एक शहरी कच्ची बस्ती में किशोरियों व युवतियों के साथ कार्यरत एक नृशास्त्री ने पाया कि उन सब के मन में स्त्रियों को कौन से सौन्दर्य उत्पाद इस्तेमाल करने चाहिए के बारे में एक सा। छवि थी : आपने सही अनुमान लगाया, वे सब जो उन्हें ब्रिटनी स्पियर्स-सी दिखने में मदद करें। नितान्त भिन्न समाजों में, जिनमें से कई स्पष्टतः पिछड़े कहे जा सकते थे, एक वैश्विक युवा संस्कृति युवाओं के अनेक लक्ष्य व मानक निर्धारित कर रही थी। यह बुनियादी परिवर्तन का एक संकेत है।[5]

यह आलेख बदलाव की दो लहरों की चर्चा करता है जिन्होंने विश्व भर में बाल्यावस्था व युवावस्था को पिछली दो शताब्दियों में प्रभावित किया, हालाँकि यह प्रभाव हर जगह एक समान नहीं था। दूसरी लहर, पूरी तरह नहीं, पर काफी हद तक पहली को ताकत देती है।

---

[4] Joan Jacobs Brumberg, *Fasting Girls: The Emergence of Anorexia Nervosa as a Modern Disease* (Cambridge, MA: Harvard University Press, 1988).

[5] Jennifer Cole, "The Jaombilo of Toamasina (Madagascar): Globalization, Agency, and the Transformation of Youthful Gender Relations," *Journal of Social History* 38 (Summer 2005): forthcoming. पूर्वी रूस पर, लेखक के लिए व्यक्तिगत सूचना।

पहली लहर ने बाल्यावस्था की परिस्थितियों को कृषक समाज से औद्योगिक समाज की परिस्थितियों में परिवर्तित किया। यह बदलाव पहले पश्चिमी यूरोप और तब उत्तरी अमरीका के अधिकाँश भागों में अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुआ। तब यह, अंशतः जानबूझकर की गई नकल से, दुनिया के अन्य भागों में फैला। बदलावों के पहले समूह में, जो सबसे बुनियादी था उसे बाल्यावस्था का आधुनिकीकरण कहा जा सकता है, बशर्ते यह समझ लिया जाए कि आधुनिक का मतलब आवश्यक रूप से बेहतर नहीं है, और सभी समाज ठीक एक ही प्रकार से या समान गति से आधुनिक नहीं होते। इसके अलावा, बाल्यावस्था का आधुनिकीकरण आज भी सम्पूर्ण नहीं है, और कुछ स्थान वैकल्पिक मॉडलों को, फिर चाहे वे परम्परागत हों या न हों, भी दर्शाते हैं। उन समाजों में भी जिन्होंने बाल्यावस्था को सर्वाधिक परिचित स्वरूप में आधुनिक बनाया, वहाँ भी बुनियादी परिवर्तन से समायोजन की प्रक्रिया आज भी जारी है। उदाहरण के लिए, अमरीकी पालक आज भी चिन्तित रहते हैं कि कहीं स्कूली शिक्षा बच्चों के लिए बोझ तो नहीं है। इस कारण अमरीका ने इसके लिए कई अनुकूलन किए हैं, जिनमें सुस्पष्ट ग्रेड में बढ़ोत्तरी (grade inflation) तथा बच्चों की आत्म-प्रतिष्ठा (self-esteem) को बढ़ाने के तमाम उपाय शामिल हैं, ताकि परिवार, स्कूल आधारित बाल्यावस्था की माँगों से अधिक सहज हो सकें।[6]

दूसरी लहर का सम्बन्ध सीधे-सीधे वैश्वीकरण से है जिसने पिछले तीन या चार दशकों में आकार लिया है, हालाँकि उसके कुछ संकेत और भी पहले से नजर आने लगे थे। वैश्वीकरण का प्रभाव आधुनिकीकरण की बुनियादी प्रक्रिया को आंशिक रूप से जारी रखता है, आधुनिक बाल्यावस्थाओं को अपनाने को प्रोत्साहित करता है, जिसमें अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रायोजन भी शामिल है। परन्तु वैश्वीकरण अर्थव्यवस्थाओं को ऐसे तरीकों से बाधित भी करता है जो बाल्यावस्था को

[6] Peter N. Stearns, *Anxious Parents: A History of Modern Childrearing in America* (New York: New York University Press, 2003); Brian Gill and Steven Schlossman, "A Sin Against Childhood: Progressive Education and the Crusade to Abolish Homework, 1897-1941," *American Journal of Education* 105 (1996): 27-66.

जटिल बना डालते हैं। साथ ही वैश्वीकरण एक प्रकार की उपभोगवादी बाल्यावस्था का सशक्त प्रचार करता है जो बदलाव की समग्र ताकत में इजाफा करता है। फलतः, उस पर अलग से विचार करना जरूरी है।

बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण ने किस प्रकार आकार लिया, उसका भौगोलिक विस्तार कैसे फैला आदि का वर्णन करने से पहले, यह आवश्यक है कि कुछ बुनियादी परिभाषाएँ भी प्रस्तुत कर दी जाएँ ताकि ऐसा न हो कि ऐतिहासिक ब्याज के चक्कर में मूल ही हाथ से चला जाए। सारांश में, बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण में मूलतः तीन परस्पर सम्बन्धित बदलाव शामिल हैं, जिनके अनेक निहितार्थ हैं। पहला सबसे बुनियादी परिवर्तन है बाल्यावस्था के उद्देश्य का काम से हटकर शिक्षा में तब्दील होना। कृषि समाजों में यह विचार आधारभूत था कि बच्चों को काफी कम उम्र में ही परिवार की अर्थव्यवस्था में मदद करना शुरू कर देना चाहिए, और किशोरावस्था के मध्य या अन्त तक स्वयं अपना भरण-पोषण करने लायक बन जाना चाहिए, और शायद परिवार के संसाधनों में कुछ योगदान भी करना चाहिए। इस विचार का स्थान एक नई धारणा ने लिया कि छोटे बच्चों को बिल्कुल भी काम नहीं करना चाहिए बल्कि शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, और क्रमशः, किशोरों को भी काम नहीं करना चाहिए और उनका भी सही गन्तव्य शिक्षा है। इसका अर्थ, जो अनेक पालक शीघ्र ही समझ भी गए, यह था कि बच्चे आर्थिक रूप से सहायक होने की बजाय आर्थिक बोझ में तब्दील हो गए, इस स्थिति ने बाल्यावस्था की प्रकृति और उद्देश्य पर नए चिन्तन की आवश्यकता पैदा की।[7]

[7] Lawrence Cremin, *The Transformation of the School: Progressivism in American Education* (New York: Knopf, 1961); Eugen Weber, *Peasants into Frenchmen: The Modernization of Rural France 1870-1914* (Stanford: Stanford University Press, 1976).

बाल्यावस्था के प्राथमिक कार्य का काम के बदले शिक्षा में रूपान्तरित होने, और अधिक सामान्य स्तर पर बढ़ते शहरीकरण ने, बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण के दूसरे परिवर्तन को प्रोत्साहित किया : परिवार के आकार को अभूतपूर्व रूप से छोटे स्तर पर सीमित करने का निर्णय। कृषक परिवार सामान्यतः पाँच से सात बच्चे चाहते थे; इससे कम संख्या से परिवार की अर्थव्यवस्था में श्रम बल को खतरा हो सकता था, और अधिक से पारिवारिक संसाधनों पर भार पड़ सकता था। परन्तु इस प्रकार की जन्म दर उन परिस्थितियों के लिए अनुचित थी जिसमें बच्चे आर्थिक लाभ के बदले खर्चे बढ़ाते थे, और शहरी विशेषताएँ ज्यादा बच्चों की निगहबानी को और चुनौतीपूर्ण बनाती थीं। पर यह महसूस करना कि जन्म दर को सीमित करना चाहिए और वास्तव में उसे हासिल कर पाना दो जुदा बातें थीं। कई समाज कठिन चर्चाओं के दौर से गुजरे कि जन्म दर को सीमित करने के कौन से उपाय नैतिक और व्यावहारिक हैं, गर्भपात की अनुमति होनी चाहिए या नहीं, आदि-इत्यादि, और अन्ततः जो विकल्प अपनाए गए वे एक से दूसरे समाज में भिन्न-भिन्न थे। कुछ समाजों में तो यह चर्चा आज भी जारी है। पर यह प्रक्रिया बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण की केन्द्रीय विशेषता सिद्ध हुई है, क्योंकि इसका निहितार्थ वयस्कों और बच्चों तथा स्वयं बच्चों के बीच के परिवर्तित सम्बन्धों के लिए था।[8]

बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण के तीसरे बुनियादी परिवर्तन का सम्बन्ध शिशु मृत्यु दर में आई नाटकीय गिरावट से था। परम्परागत रूप से कुल जन्मे बच्चों में से 30-50 प्रतिशत दो वर्ष का होने से पहले ही मर जाया करते थे। समय की दृष्टि से जन्म दर में घटाव-बढ़ाव परिवर्तनशील था। कुछ दृष्टान्तों में, परिवारों ने जन्म दर घटाई पर साथ ही वे अपने बच्चों के बचे रहने की उम्मीद के प्रति अधिक गहराई से आसक्त हुए। अन्य मामलों में, शिशु मृत्यु दर में कमी पहले आई, अकसर बेहतर स्वच्छता और जन स्वास्थ्य उपायों के कारण, जिससे अन्ततः क्षतिपूर्ति के

[8] E. A. Wrigley, *Population and History* (New York: McGraw-Hill, 1969); Wally Seccombe, *Weathering the Storm: Working-Class Families from the Industrial Revolution to the Fertility Decline* (London: Verso, 1993).

रूप में जन्म दर कम करने की तात्कालिक आवश्यकता उभरी।[9] अतः आधुनिक बाल्यावस्था, काम से शिक्षा में हुए रूपान्तर के सन्दर्भ में पुनर्परिभाषित हुई। इसके साथ ही औसत परिवार में बच्चों की संख्या तथा बाल्यावस्था व मृत्यु के सम्बन्ध में भी क्रान्तिकारी बदलाव आया।

ये बुनियादी परिवर्तन अपने साथ अन्य अतिरिक्त बदलाव भी लाए, जो समय व स्थान के अन्तरों के बावजूद आए। जैसा कयास लगाया जा सकता था, बालक के वांछनीय गुणों में विस्तार हुआ और इन गुणों में बुद्धिमानी पर विशेष ध्यान शामिल हुआ; अधिकाँश शिक्षा प्रणालियों में परीक्षाओं का प्रावधान किया गया, अंक/ग्रेड आवंटन के अनेक तरीकों ने कुछ बच्चे दूसरों से अधिक चतुर होते यह इस कदर स्पष्ट कर दिया कि वयस्कों तथा पालकों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुए बिना न रह सका।[10]

आयु के अनुसार बच्चों का पृथक्करण दो कारणों से घटित हुआ। पहला यह, कि अधिकाँश स्कूल बच्चों को आयु के अनुसार कक्षाएँ या कक्षाओं के अन्दर बैठने के अलग हिस्से आवंटित करते थे। दूसरा, अधिकाँश बच्चे अब तुलनात्मक रूप से कम सहोदरों के साथ पलने लगे, इस अनुभव ने उनके सम्बन्धों को आयु के हिसाब से घटाया और स्कूली साथियों के साथ सम्पर्क-संवाद को प्रोत्साहित किया। आयु के आधार पर सामाजिक समूहों की स्थापना और उसी अनुसार कड़ा पृथक्करण, जो स्त्री-पुरुषों की केवल कुछ ही अन्तर्क्रियाओं में संशोधित होता है, आधुनिक बाल्यावस्थाओं की सुस्पष्ट विशेषता है। आयु के आधार पर वर्गीकरण ने बच्चों के प्रति वयस्कों

---

[9] Wrigley, *Population and History*; Ansley J. Coale and Susan Cotts Watkins, *The Decline of Fertility in Europe* (Princeton: Princeton University Press, 1986); J. C. Chesnais, *Demographic Transition: Stages, Patterns and Economic Implications*, trans. Elizabeth and Philip Kreager (Oxford: Clarendon Press, 1992).

[10] M. M. Sokal, ed., *Psychological Testing and American Society, 1870-1930* (New Brunswick: Rutgers University Press, 1987); A. S. Kaufman, "Intelligence Tests and School Psychology," *Psychology in Schools* 33 (2000): 748; Paul Chapman, *School as Sorters: Lewis M. Terman Applied Psychology and the Intelligence Testing Movement, 1890-1930* (New York: New York University Press, 1988).

के चिन्तन को भी प्रभावित किया। बीसवीं शताब्दी तक, पहले पश्चिम में, पर शीघ्र ही अधिक व्यापक स्तर पर, आयु-क्रम आधारित विकास रुझानों (age-sequenced developmental patterns) सम्बन्धी विशेषज्ञता विकसित हुई, जिसमें संज्ञानात्मक कौशल भी शामिल थे। इस विशेषज्ञता ने स्कूली शिक्षा के अन्दर व उसके बाहर भी आयु अनुसार विशिष्ट रुझान विकसित व लागू किए (कई आलोचकों का तर्क था कि इन रुझानों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया)।[11]

वयस्क-बालक तथा पालक-बालक सम्बन्धों के वृहत्तर आयाम भी प्रभावित हुए, हालाँकि इसके फलस्वरूप अनेक फार्मूला सामने आ सकते थे। शिक्षा बच्चों पर पालकों के नियंत्रण को घटा सकती थी– हालाँकि कृषि समाजों में भी कुछ पालकों ने नियंत्रण त्यागा था। नियंत्रण में कमी सरोकार का कारण बन सकती थी, खासकर तब जब स्कूलों को परिवार के सामाजिक वर्ग, जातीय या धार्मिक मूल्यों से भिन्न मूल्यों के प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता था।[12] दूसरी ओर एकदम छोटे बच्चों के साथ पालकों का सम्पर्क अकसर घनिष्ठ हुआ। जन्म दर घटने (और शिक्षा के चलते बालिकाओं के घर से बाहर रहने) के कारण छोटे बच्चों की देखरेख के लिए सहोदरों की उपलब्धता में कमी आई तथा छोटे बच्चों पर वयस्कों द्वारा अधिक प्रत्यक्ष ध्यान दिया जाने लगा। इस स्थिति में यह आवश्यक हो गया कि या तो पालक खुद अधिक देखभाल करें या विकल्प के रूप में उन्हें 'झूलाघरों' (day care) में भेजें या घर में सहायक रखें। यह तथ्य वयस्कों की भूमिका से जुड़े आनन्दों या दुष्चिन्ताओं को प्रभावित कर सकता था। और अन्तिम बात, घटती जन्म व मृत्यु दरों ने सम्भवतः पालकों में अपने बच्चों के प्रति व्यक्तिगत आसक्ति को भी बढ़ाया। यहाँ भी

---

[11] अधिगम में आयु विशिष्टता के गुरु ज्याँ पियाजे हैं; उदहारण के लिए उनकी *Child's Conception of the World* (Savage, MD: Littlefield Adams Quality Paperbacks, 1989) देखें; आयु ग्रेडिंग के सामान्य अमरीकी शैक्षिक रूपान्तरण के लिए Benjamin Bloom, ed., *Taxonomy of Educational Objectives: The Classification of Educational Goals* (New York: Longmans, Green & Co., 1956) देखें।

[12] Michael B. Katz, *The Irony of Early School Reform: Educational Innovation in Mid-Nineteenth-Century Massachusetts* (Cambridge: Cambridge University Press, 1968; New York: Teachers College Press, 2001).

सावधान रहने की जरूरत है; कृषि समाजों के पालक भी अमूमन अपने बच्चों से गहरा प्यार करते थे और उनकी मृत्यु से शोक संतप्त होते थे। फिर भी, बच्चों की संख्या कम होने और हरेक की मृत्यु की सम्भावना घटने से, औसतन हर बच्चे में भावनात्मक निवेश बढ़ा। बेशक यह कथन भावनात्मक होने के साथ एक आर्थिक कथन भी है। जिन समूहों में जन्म दर कम हो वहाँ पालक अपने बच्चों के प्रति अधिक लाड़-प्यार जताने का रुझान दर्शाते हैं। इसके प्रमाण हमें अठारहवीं शताब्दी के अन्त के पश्चिमी देशों से लेकर, बीसवीं शताब्दी के अन्त के चीन तक में मिलते हैं।[13]

बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण के लैंगिक निहितार्थ भी थे, हालाँकि इनसे भी जटिल तरीकों से निपटा जा सकता था। बच्चों में जेंडर भेद करने की वस्तुनिष्ठ आवश्यकता धीरे-धीरे कम होती गई। जब बच्चों को लिंग के आधार पर काम सौंपना कम हुआ, और लड़कियों के लिए कमतर जन्म दर के चलते मातृत्व पर बल देना घटा, तो कम से कम लड़कों और लड़कियों के नितान्त भिन्न अभिमुखीकरण को फिर से परिभाषित किया गया। और सच तो यह है, हालाँकि यह अहसास अक्सर कुछ झिझक के साथ आया, कि लड़कियाँ और लड़के स्कूली पढ़ाई में, जो बाल्यावस्था का नया काम था, लगभग एक समान कौशल के साथ प्रदर्शन करते हैं; यह भी सम्भव था कि लड़कियाँ बेहतर हों। इस तथ्य पर यह आग्रह कर पर्दा डाला जा सकता था कि लड़कियों व लड़कों को भिन्न-भिन्न विषयों का अध्ययन करना चाहिए– लड़कियों के लिए इंजीनियरिंग नहीं बल्कि गृह अर्थशास्त्र (home economics), और तो और पढ़ने के लिए भिन्न किताबें (जैसे उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में फ़्रांस में) जो लड़कियों को उनकी विशेष पारिवारिक व सहायक ज़िम्मेदारियाँ बताती हों।[14] या, जब लड़कियों और लड़कों को 1920 के दशक में अमरीकी सहशिक्षा में धकेला

[13] Viviana Zelizer, *Pricing the Priceless Child: The Changing Social Value of Children* (New York: Basic Books, 1985); Stearns, *Anxious Parents* भी देखें।

[14] Linda Clark, *Schooling the Daughters of Marianne: Textbooks and the Socialization of Girls in Modern French Primary Schools* (Albany: State University of New York, 1984).

गया, तो पृथक गतिविधियों, खास कपड़ों, और भिन्न रंगों जैसे उपायों से (इस बिन्दु पर अमरीकी उपभोक्ता संस्कृति ने लड़कियों के लिए गुलाबी और लड़कों के लिए नीला रंग प्रचारित किया) यह और पुख्ता किया गया कि बाल्यावस्था में लड़का और लड़की अलग-अलग थे।[15] फिर भी सच यह है कि बच्चों के जेंडर के विषय में तर्क करने के परम्परागत आधार बदल चुके थे, तमाम प्रयासों के बावजूद यह सम्भावना थी कि यह दूरी व्यवहार में धीमे-धीमे ही पाटी जा सके।

और अन्त में, यह तर्क करना मोहक लगता है कि बाल्यावस्था के आधुनिकीकरण ने कृषि समाज की तुलना में अब बाल्यावस्था और वयस्कावस्था के बीच की दूरी बढ़ा दी है। कृषि समाज में अधिकाँश बच्चे शैशवावस्था के बाद वयस्कों के साथ काम में और ऐसे उपक्रमों में जुड़ जाते थे जो स्पष्ट रूप से वयस्क भूमिकाओं की दिशा में ले जाएँ। बेशक वे वयस्क नहीं थे, उनमें वयस्कों की सत्ता और सम्पत्ति का और अकसर विभिन्न कौशलों का भी अभाव होता था; और इसमें भी शंका नहीं कि उन पर वयस्कों का निरीक्षण रहता था और अक्सर कठोर अनुशासन भी। पर वे, और साथ ही वयस्क भी, बाल्यावस्था को जीवन के अगले चरण की राह में एक पड़ाव भर मानते थे। परन्तु शिक्षा पर दिए जाने वाले आधुनिक बल ने बाल्यावस्था को अधिक पूर्णता के साथ अलग कर दिया। बेशक, वयस्कों ने यह तर्क किया और कुछ बच्चे यह समझ भी सके, कि शिक्षा वयस्क कार्यों व भूमिकाओं की तैयारी है। पर यह सम्बन्ध काफी अमूर्त हो सकता था, और वास्तविकता में अधिकाँश बच्चों का दिन अब वयस्कों की दुनिया– जिसे अमरीकावासी 'वास्तविक दुनिया' कहते हैं– से अलग-थलग गुजरने लगा। यह अलगाव बच्चों के प्रति वयस्कों के नजरिए को रंजित कर सकता था, क्योंकि बाल्यावस्था विशेषाधिकारों और संवेदनशीलता का एक अजीब सा मिश्रण नजर आ सकती थी। यह अपने जीवन का अर्थ स्थापित करने के बच्चों के प्रयासों को

[15] Julia Grant, "A 'Real Boy' and not a Sissy: Gender, Childhood and Masculinity, 1890-1940," *Journal of Social History* 38 (2004): 829-51. See also David Tyack and Elisabeth Hansot, *Learning Together: A History of Coeducation in American Schools* (New Haven: Yale University Press, 1990).

अधिक जटिल भी बना सकता था, क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के तनावों, यहाँ तक कि मनोविकारों को भी प्रोत्साहित कर सकता था, जो (जहाँ तक हमें ज्ञात है) अधिक परम्परागत बाल्यावस्थाओं में इतना आम नहीं था।[16]

बाल्यावस्था के बुनियादी आधुनिकीकरण को परिभाषित करना आसान है : शिक्षा, कम मृत्यु, कुल आबादी तथा परिवारों में कम बच्चे। परन्तु इन सरल पर आधारभूत परिवर्तनों से उपजने वाले लगभग अपरिहार्य नतीजों को पकड़ पाना अधिक मुश्किल है, और वे सक्रिय रूप से विशिष्ट सामाजिक व सांस्कृतिक रुझानों से निर्मित हो सकते हैं। इसके बावजूद, नाटकीय रूप से नए मुद्दों का समूह उभरा जिनका सम्बन्ध बच्चों के सामाजिक जीवन से लेकर जेंडर और मानसिक स्वास्थ्य तक से था।

आधुनिक बाल्यावस्था का उद्भव, जागरण (Enlightenment) से लेकर उद्योगीकरण जैसी अन्य प्रमुख घटनाओं के साथ पहलेपहल पाश्चात्य समाज में हुआ। विश्व इतिहास की दृष्टि से देखें, तो यह पाश्चात्य उद्गम का विचार सन्दिग्ध प्रतीत हो सकता है। विश्व इतिहासकार पश्चिम व पाश्चात्य नेतृत्व पर अत्यधिक बल देने के विषय में सन्देह जताते हैं, जो सही भी है। पर इस मामले में पश्चिम ने कुछ प्रमुख परिवर्तनों की अगुवाई की जो अन्ततः वैश्विक बने। इस वक्तव्य को स्वीकारने के बावजूद यह कहना महत्त्वपूर्ण होगा कि आधुनिक पाश्चात्य बाल्यावस्था के सभी आयामों को अन्य समाजों ने अंगीकार नहीं किया, और अनेक समाज आज भी यह सोच-विचार कर रहे हैं कि आधुनिक बाल्यावस्था के समूचे पैकेज को स्वीकारा जाना चाहिए भी या नहीं। हम

[16] William Kirk, *Adolescent Suicide: A School-Based Approach to Assessment & Intervention* (Champaign: University of Illinois Press, 1993); Paul R. Robbins, *Adolescent Suicide* (Jefferson, NC: McFarland & Co., 1998); Victor Bailey, *"This Rash Act": Suicide across the Life Cycle in the Victorian City* (Stanford: Stanford University Press, 2000).

विश्व के किसी आसान से पाश्चात्यीकरण का दावा नहीं कर रहे हैं। पर पश्चिमी उद्‌गमों पर कुछ आरम्भिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

पश्चिम की बाल्यावस्था में आधुनिकता के आगमन की तैयारी सत्रहवीं शताब्दी के अन्त व अठारहवीं शताब्दी में घटित कुछ महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक घटनाओं ने की। बाल्यावस्था में आए वास्तविक ढाँचागत बदलावों के पूर्व दो प्रकार का पुनर्चिन्तन हुआ, जिसने निश्चित रूप से इन बदलावों की तैयारी करने के साथ पश्चिम में उनकी विशिष्ट दिशा निर्धारित करने में भी मदद की। पहले बदलाव में, जिसका सम्बन्ध खासतौर से पश्चिमी जागरण व वैज्ञानिक क्रान्ति से था, पाश्चात्य दार्शनिकों के बीच एक बढ़ता विवाद यह था कि बच्चे जन्म से ही भ्रष्ट नहीं होते, जैसा ईसाई और खासकर प्रोटैस्टेंट धर्म सिद्‌धान्तों का मूल पाप का विचार सुझाता था। बल्कि, जैसा जॉन लॉक (जॉन Locke) ने तर्क किया, बच्चे जन्म लेते समय कोरी स्लेट के समान होते हैं जो सीखने को तत्पर होते हैं और मूलतः अच्छे, या कम से कम तब तक तटस्थ होते हैं जब तक कि बाहरी प्रभाव उन्हें भ्रष्ट न कर डालें। इन विचारों ने बाल्यावस्था को शिक्षा के लिए आरक्षित करने की आवश्यकता सम्बन्धी तर्कों को प्रोत्साहित किया। धर्म द्‌वारा परम्परागत रूप से पाप व उसके प्रतिकार के लिए अनुशासन पर दिए जाने वाले बल पर गहरे वाद-विवाद उभरे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक भी अमरीकी प्रोटैस्टेंट धर्मावलम्बी आरम्भिक बाल्यावस्था के पापमय और निष्पाप नजरिए पर विवाद करते रहे। क्रमशः बच्चों के निष्पाप होने का विचार स्वीकारा जाने लगा, हालाँकि अल्पसंख्यक परम्परावादी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए।[17]

[17] John Locke, *Essay Concerning Human Understanding* (London, 1838); Philip Greven, *The Protestant Temperament: Patterns of Child-Rearing, Religious Experience and the Self in Early America* (New York: Knopf, 1977); Horace Bushnell, *Views of Christian Nurture and of Subjects Adjacent Thereto* (Hartford, CT, 1847).

दूसरा नवाचार, जो 1730 के दशक में आकार पाने लगा था, का सम्बन्ध सशक्त भावनात्मक सम्बन्धों पर दिए जाने वाले बल पर था, जिन्हें किसी सफल परिवार को एकजुट करना चाहिए : खासतौर से पालकों, और उनमें भी माता, और बालकों के बीच के सम्बन्ध। कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि पारिवारिक प्रेम का विचार ही नया था, पर ऐसा स्पष्ट बल अभूतपूर्व था। किसी भी मर्यादित परिवार में बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति सक्रिय स्नेह अभिव्यक्त करना चाहिए; सहोदरों को एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए; और माताओं को अपनी भावनाओं से समूचे परिवार को बाँधे रखना चाहिए। सम्मानित परिवारों के चित्रों में भावनात्मक व शारीरिक सम्पर्क को अधिक अभिव्यक्त किया जाने लगा।[18]

ये बौद्धिक बदलाव अन्य घटनाओं से सम्बन्धित थे, हालाँकि कारण और प्रभाव को चिह्नित कर पाना हमेशा सरल नहीं है। नामकरण के अभ्यास बदलने लगे। अब ग्रामीण परिवार बच्चे के नामकरण के पहले उसके दो वर्ष का हो जाने का, ताकि उसका जीवित रहना सुनिश्चित हो जाए, इन्तजार कम करने लगे। बालक की मृत्यु के बाद उसके नाम के पुनः उपयोग की सम्भावना भी कम हुई तथा बच्चों के लिए पारिवारिक या बाइबल में पाए जाने वाले नामों के बदले मौलिक नाम तलाशने की चेष्टा में इजाफा हुआ। यह सब बच्चे में भावनात्मक निवेश में बढ़ोतरी और प्रत्येक बालक की वैयक्तिकता के अहसास में वृद्धि सुझाता है (यही उनके पृथक नामों का कारण भी था)।[19]

---

[18] Elisabeth Badinter, *Mother Love: Myth and Reality* (New York: Macmillan, 1981); Nancy Cott, *Bonds of Womanhood: "Women's Sphere" in New England, 1780-1835* (New Haven: Yale University Press, 1997); Randolph Trumbach, *The Rise of the Egalitarian Family: Aristocratic Kinship and Domestic Relations in Eighteenth-Century England* (New York: Academic Press, 1978).

[19] Daniel Scott Smith, "Child-Naming Practices, Kinship Ties, and Change in Family Attitudes in Hingham, Massachusetts," *Journal of Social History* 18 (1985): 541-66.

अनुशासन में बदलाव आया, या कम से कम उस पर नई तरह से चर्चा की जाने लगी। पश्चिमी यूरोप में शिशुओं को कपड़े में कसकर लपेटने का अभ्यास त्याग दिया गया। बल्कि, वयस्क अब यह मानने लगे कि बच्चों को हाथ-पैर चलाने के लिए मुक्त छोड़ा जाना चाहिए ताकि उनका स्वस्थ विकास हो सके, हालाँकि इसके फलस्वरूप किसी सहोदर, परिचारिका या पालक को उनकी अधिक निगहबानी करनी पड़ती थी। दूध पिलाने के लिए बच्चों को धायों के पास भेजने के अभ्यास की नई आलोचना शुरू हुई; पालकों को अपने बच्चों की देखभाल खुद ही करनी चाहिए और ऐसे अभ्यासों से बचना चाहिए जो अकसर बालक के स्वास्थ्य को खतरा पहुँचा सकते हों, जैसा धायों द्वारा स्तनपान करवाने से हो सकता था। पारिवारिक परामर्श बच्चों के प्रति अत्यधिक क्रोध को हतोत्साहित करने लगा; क्योंकि बच्चे निष्कपट हैं उन्हें डाँट-फटकार से मुक्त किया जाना चाहिए। शारीरिक दण्ड को अकसर बेहद कठोर माना जाने लगा। पालकों को चेतावनी दी जाने लगी कि वे अपने बच्चों में सर्वव्यापी मृत्यु या हौआ जैसी परम्परागत धमकियों का भय न बैठाएँ। बेशक ये तमाम बदलाव कई दशकों तक शाब्दिक रहे और वास्तविकता का रूप नहीं ले सके। अमरीकी पारिवारिक मार्गदर्शिकाएँ बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में भी, आरम्भिक सलाह के पूरे सौ वर्ष गुजर जाने के बावजूद, पालकों के क्रोध के विरुद्ध तर्क कर रही थीं। पर हवा में नए विचार थे और कुछ पालक निश्चित रूप से बाल्यावस्था के प्रति अपने नजरिए को और अपने बच्चों से अपने बरताव को बदलने की कोशिश करने लगे थे।[20]

इसके अलावा, शिक्षित करने पर दिए जाने वाले नए बल के साथ, अधिक सम्पन्न वर्गों के बच्चों को भी उपभोक्ता माना जाने लगा– आज के अर्थ में नहीं जिसमें वे खुद अपने लिए ढ़ेरों चीजें खरीदते हैं, पर इस अर्थ में कि ऐसे उत्पाद बाजार में आने लगे जो खासतौर पर बच्चों के उपयोग

[20] George Sussman, *Selling Mother's Milk: The Wetnursing Business in France, 1715-1914* (Urbana: University of Illinois Press, 1982); Valerie Fildes, *Wetnursing, a History from Antiquity to the Present* (Oxford: Basil Blackwell, 1988); Trumbach, *Rise of the Egalitarian Family*; Peter N. Stearns, *American Cool: Constructing a Twentieth-Century Emotional Style* (New York: New York University Press, 1994).

के लिए ही बने थे। शैक्षणिक गुड्डे-गुड़ियाएँ व अन्य वस्तुएँ, और खासतौर से बच्चों के लिए लिखी गई किताबें। बदलाव के ये संकेत अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से नजर आने लगे। ये बदलाव बच्चों के मुक्त खेल को प्रतिबन्धित कर सकते थे और वयस्कों के मार्गदर्शन और निरीक्षण के अधिक अवसर उपलब्ध करवा सकते थे, पर वे बाल्यावस्था के उद्देश्य सम्बन्धी नए विचारों से उपजे थे।[21]

और अन्त में, सामान्य बदलावों के सन्दर्भ में, बालकों व किशोरों के प्रति एक नई आशावादिता ने पश्चिमी यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमरीका में आयु के व्यापक सामाजिक मूल्यांकन को नया रूप दिया। 1750 में जहाँ अधिकाँश अमरीकी अपनी उम्र के बारे में झूठ बोल अपनी वास्तविक उम्र से अधिक बड़े होने का दावा करते थे, और सम्भ्रान्त लोगों के लिए बनी पाउडर लगे नकली बालों की टोपी समेत ऐसे वस्त्र चुनते थे जो उनको अधिक उम्र का दर्शाएँ; 1850 तक उम्र बढ़ाने वाले वस्त्रों को यौवन की प्रशंसा में त्याग दिया गया, और जो लोग अपनी उम्र के बारे में झूठ बोलते वे अब खुद को कम उम्र का बताने लगे। दरअसल युवावस्था वास्तव में अधिक सुखद नहीं बन रही थी, पर सिद्धान्त में उसका ठप्पा अभूतपूर्व बन चला था।[22]

महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक तैयारी के बावजूद पश्चिम में आधुनिक बाल्यावस्था के वास्तविक ढाँचे काफी धीरे-धीरे बदले। उदाहरण के लिए, अठारहवीं शताब्दी के अन्त तथा उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में फ़्रांस में शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा, जिसमें अफसरशाही और तकनीकी अभिजात वर्ग के प्रशिक्षण के लिए नई उच्चतर माध्यमिक स्कूल सुविधाओं पर विशेष बल दिया गया।[23]

---

[21] Neil McKendrick, John Brewer, and J. H. Plumb, *The Birth of a Consumer Society: The Commercialization of Eighteenth-Century England* (Bloomington: Indiana University Press, 1982).

[22] David Hackett Fischer, *Growing Old in America* (New York: Oxford University Press, 1977).

[23] Peter N. Stearns, *Schools and Students in Industrial Society: Japan and the West, 1870-1940* (Boston: Bedford Books, 1998).

सार्वजनिक शिक्षा सम्बन्धी विचार और धीमी गति से उभरे। उदाहरण के लिए, फ़्रांस ने प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने सम्बन्धी कानून को 1830 के दशक में ही पारित कर दिया था, पर उसका क्रियान्वयन आधा-अधूरा ही रहा। नवीन संयुक्त राज्य अमरीका के उत्तरी राज्य अधिक तेजी से बढ़े। इस नवीन राष्ट्र में चर्च-राज्य जटिलताएँ कम थीं, साथ ही इस बात को लेकर सरोकार भी कम थे कि सार्वजनिक शिक्षा से परम्परागत सामाजिक पदानुक्रम (hierarchies) गड़बड़ा सकता था। इसके अलावा, अमरीकी नेतृत्व में शीघ्र ही शिक्षा के प्रति कटिबद्धता बनी, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को बड़ी संख्या में आ रहे अप्रवासियों को स्थानीय संस्कृति से अनुकूलित करने का जरिया माना। कई राज्यों, जैसे मैसाच्युसैट्स में, 1830 के दशक तक व्यापक शिक्षा प्रणाली स्थापित हो चुकी थी और वे शिक्षा को अनिवार्य करने की दिशा में बढ़ने लगे थे। ठीक इसी दौरान भारी बहस के बीच बाल श्रम को नियमित करने के कानून विकसित होने लगे। मध्य वर्ग की राय इस मुद्दे पर विभाजित थी। कुछ का तर्क था कि बच्चों को संरक्षण देना और शिक्षित करना महत्त्वपूर्ण है, पर अन्य बच्चों के सस्ते श्रम पर निर्भर थे। श्रमिक भी विभाजित थे, परन्तु जैसे-जैसे कारखाने बढ़े और परिवार के सदस्यों द्वारा बच्चों की निगरानी की सम्भावना घटी, बच्चों की आय पर परम्परागत निर्भरता, नियमन की इच्छा में परिवर्तित होने लगी। कई पश्चिमी देशों ने उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कानून पारित किए, पर वास्तविक निरीक्षण और क्रियान्वयन कुछ बाद में ही हुआ।[24] उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक बाल श्रम का उपयोग कम होने लगा। इसमें नई मशीनों का भी योगदान था जिनके चलते छोटे बच्चों द्वारा किए जाने वाले कुछ अधिक सरल काम अब मशीनों द्वारा किए जाने लगे थे। फिर भी निम्न वर्ग के बच्चे बीसवीं शताब्दी में भी, फुटकर रोजगार जैसे अखबार बेचना, और छोटे-मोटे अपराधों समेत सड़कों पर होने वाली गतिविधियों, में लिप्त रहे। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन अधिक सुस्त गति से आए, पर आए। हालाँकि बीसवीं शताब्दी में भी बच्चों से छुटपुट कामों में और फसल कटाई में काफी मदद की उम्मीद की

[24] Heywood, *Childhood*; Zelizer, *Pricing*; Neil Smelser, *Social Change in the Industrial Revolution: An Application of Theory to the British Cotton Industry* (Chicago: University of Chicago Press, 1969).

जाती रही, पश्चिम में किसान व कृषक परिवारों ने शिक्षा की जरूरत को स्वीकारना आरम्भ कर दिया, कभी-कभी तो कानूनी बाध्यता के भी पहले। उदाहरण के लिए, फ़्रांसीसी किसानों को, जो 1860 के दशक में बाजार उन्मुख कृषि की दिशा में बढ़ने लगे थे, यह अहसास होने लगा कि परिवार की अर्थव्यवस्था के लिए भी ऐसे बेटे बेहतर होंगे जो साक्षर हों, हिसाब-किताब कर सकें और जिन्हें कुछ वैज्ञानिक प्रशिक्षण भी मिला हो।[25]

आरम्भिक बाल्यावस्था के परे शिक्षा के प्रति कटिबद्धता, खासकर मध्य वर्ग के बाहर, अधिक धीमे-धीमे आई। अमरीका में 1900 के आस-पास भी कुछ मध्य वर्गीय और तीन-चौथाई श्रमिक वर्ग के बच्चे हाईस्कूल की पढ़ाई नहीं करते थे।[26] फिर भी कम से कम मध्य किशोरावस्था तक स्कूल में बने रहने का रुझान तब तक व्यापक स्तर पर विकसित हो गया और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, पहले अमरीका में, बाद में पश्चिमी यूरोप व कनाडा में, कॉलेज में प्रवेश लेने में तब्दील होने लगा। युवावस्था और बाल्यावस्था पुनर्परिभाषित हो रही थी।

जेंडर की परिभाषा भी शिक्षा के माध्यम से पुनः की गई, पर यह भी धीरे-धीरे हुआ। शिक्षा के विस्तार के आरम्भिक दौर में राज्य तथा परिवार, दोनों ने ही लड़कों पर ध्यान केन्द्रित किया जिनके शिक्षित होने से परिवारों को सर्वाधिक लाभ होता (पालकों को, और अन्ततः स्वयं लड़कों को भी)। फिर भी, बालिकाओं का समावेशन माध्यमिक स्तर पर भी धीमे-धीमे बढ़ा, हालाँकि उनकी पाठ्यचर्या व गतिविधियाँ अकसर लड़कों से भिन्न होती थीं। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक,

---

[25] Weber, *Peasants*.

[26] Joel Perlman, "Curriculum and Tracking in the Transformation of the American High School: Providence, R.I. 1880-1930," *Journal of Social History* 19 (1985): 29-55; Charles R. Day, *Schools and Work: Technical and Vocational Education*
in France since the Third Republic (Montreal: McGill-Queens University Press, 2001); Mary Jo Maynes, *Schooling in Western Europe: A Social History* (Albany: State University of New York Press, 1985).

महिलाओं के लिए सफेदपोश व्यवसायों के खुलने के साथ, परिवारों ने पाया कि शिक्षा बालिकाओं के लिए भी खासतौर से महत्त्वपूर्ण है; 1920 के दशक तक अमरीका में हाईस्कूलों में बालिकाओं का प्रतिशत लड़कों से अधिक हो गया। (1980 के दशक तक यही जेंडर उलटाव कॉलेज आबादी में भी देखा गया।)

जन्म दर में कमी भी क्रमशः ही आई, यहाँ भी नेतृत्व मध्यम वर्ग ने ही किया, जो अपने बच्चों के लिए शिक्षा तथा सम्पत्ति का खर्च वहन करने में सक्षम था। इसका अनुसरण पहले शहरी कामगारों और उनके बाद किसानों ने किया (पर संयुक्त राज्य अमरीका के कृषक परिवारों ने काफी पहले ही निम्न जन्म दर को अपना लिया था, क्योंकि वे अपने बच्चों को विरासत में सम्पत्ति उपलब्ध करवाना चाहते थे)। जन्म दर को घटाना एक क्रान्तिकारी कदम था, और कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इस कारण लालन-पालन के काम के संख्यात्मक रूप से कम होने से महिलाएँ और पुरुष भ्रम की स्थिति में आ गए। उनमें अनिश्चय का भाव था कि यह बदलाव परिवार के प्रति उनकी कटिबद्धता और उनकी प्रजनन क्षमता के बारे में भला क्या कहता है।[27] इस परिवर्तन को उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान गर्भ निरोधक उपायों की अविश्वसनीयता और आधिकारिक यौनिक लज्जाशीलता के युग में उनके उपयोग के विरुद्ध कठोर पूर्वाग्रह, यहाँ तक कि कानूनी बाधाओं ने और अधिक जटिल बना दिया।[28] बहुत से लोग यौनिक संयम बरतकर ही जन्म दर कम करते थे। पर यहाँ भी, बुनियादी रुझान स्पष्ट रूप से जड़ें जमाने लगे, और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक बड़े परिवार, खासतौर से शहरों व गैर-अप्रवासी समूहों में, असामान्य बन चले।

---

[27] Rudolph Binion, "Fiction as Social Fantasy: Europe's Domestic Crisis of 1879-1914," *Journal of Social History* 27 (1994): 679-99.

[28] Seccombe, *Weathering*.

आधुनिकता की पहेली का अन्तिम हिस्सा, मृत्यु दर में कमी, पश्चिम में आकस्मिक रूप से घटित हुआ। जन्म दर में आई कमी के पहले बच्चों की मृत्यु को लेकर व्यथा और अपराधबोध का भाव हावी रहता था। मृत्यु दर में यह परिवर्तन सार्वजनिक स्वास्थ्य के नए उपायों व प्रसव सहायकों को संक्रमण-मुक्त (sterilisation) करने पर दिए जाने वाले बढ़ते बल के कारण आया। 1800 से 1920 के दरमियान, शिशु मृत्यु दर में एक वास्तविक क्रान्ति आई जिसने उसे अप्रत्याशित रूप से 5 प्रतिशत या उससे भी कम कर डाला। 1920 के दशक में, जब यह परिवर्तन और अधिक लाभों में अनुगूँजित हो रहा था, पश्चिम में आधुनिक बाल्यावस्था का ढाँचा पूर्ण हो चुका था।

ऐसे क्रान्तिकारी बदलावों से समायोजित होने (पटरी बैठाने) में बेशक और अधिक समय लगा। शिशु मृत्यु दर में आई कमी अधिकांश परिवारों के लिए विशुद्ध लाभ ही था, इसका एकमात्र नुक्सान पालकों के अवसाद का नया स्तर था, जब तमाम उपायों के बावजूद किसी बालक की मृत्यु हो जाती। संयुक्त राज्य अमरीका में, 1940 के दशक तक कुछ ही विवाह बच्चे की मृत्यु के बाद बच पाते थे। यह परम्परागत प्रतिक्रियाओं के विपरीत था।[29] जन्म दर में कमी ज्यादा विवादास्पद थी, और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सम्पन्नता के लौटने के साथ समूचे पाश्चात्य समाज में अनपेक्षित रूप से जन्म दर में वृद्धि हुई, जिसने यह दर्शाया कि कई लोग केवल एक या दो बच्चों के विचार से पूरी तरह सहज नहीं थे। 1970 के दशक तक यह आकस्मिक जन्म दर वृद्धि समाप्त हुई। इससे प्रतीत हुआ कि छोटे परिवारों के प्रति अधिक सुनिश्चित प्रतिबद्धता, और बच्चे पैदा करने को लेकर ही अनिश्चय की भावना बढ़ी है, खासकर उपभोग व अपने शौकों को लक्ष्य मानने वाले मध्यम वर्गीय परिवारों में, जहाँ पति-पत्नी दोनों अपने पेशों के प्रति कटिबद्ध थे।[30] इक्कीसवीं शताब्दी तक कई समाजों की जन्म दर इतनी भी न रही कि वहाँ की आबादी का

---

[29] Stearns, *American Cool*.

[30] Michael Young and Peter Willmott, *The Symmetrical Family* (New York: Pantheon Books, 1973).

स्तर कायम रह सके। और अन्ततः, शिक्षा ने भी अपनी तरह के सरोकार पैदा किए। जैसे-जैसे शिक्षा सार्वजनिक बनने लगी ग्रेडिंग जैसे नए आयाम बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जुड़ने लगे। इनके चलते कई पालकों में बच्चों के लिए उनके निहितार्थों और अपने नियंत्रण को लेकर कुछ अनिश्चय नजर आने लगा। अमरीका में गृहकार्य (homework) के विरुद्ध एक लम्बा अभियान पालकों के इस विश्वास के कारण चला कि अत्यधिक बौद्धिक काम बच्चों के लिए खराब है, तथा इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भी स्कूली दबाव के स्वीकार्य स्तर की परिभाषा पर बहस जारी रही।

परन्तु, पश्चिम में समायोजन के इन रोचक लक्षणों और झिझकों से अधिक महत्त्वपूर्ण था विश्व के अन्य भागों में बाल्यावस्था के आधुनिक मॉडल का प्रसार। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक अनेक क्षेत्रों ने पाश्चात्य रुझानों की दिशा में कुछ कदम उठाए। पर ये प्रयास सीमित संसाधनों व ग्रामीण आबादी के ऊँचे अनुपात के कारण बाधित हुए। लातीनी अमरीका के कई देशों ने अपनी शिक्षा व्यवस्था को विस्तृत करने की चेष्टा की, और वहाँ एक मध्यम वर्ग उभरा जो बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था को निर्विवाद रूप से शिक्षा के साथ जोड़ने लगा।[31] पश्चिम के बाहर आधुनिक बाल्यावस्था को अपनाने वाला सबसे आरम्भिक नाटकीय रूपान्तरण बेशक जापान में हुआ। मेइजी युग के पहले सुधारों में एक था 1872 में पारित कानून, जिसने वहाँ लड़कियों और लड़कों दोनों के लिए सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाई। शिक्षा को वास्तव में सार्वजनिक बनने में दो दशक और लगे, और किशोरों को व्यापक स्तर पर स्कूलों में शामिल करने में और भी ज्यादा समय लगा, हालाँकि मध्यम और उच्च वर्गों के लिए माध्यमिक स्तर तक के प्रशिक्षण का विस्तार हुआ। आरम्भिक जापानी उद्योग किशोरों के श्रम पर आश्रित था, मय महिला श्रम के, क्योंकि वह सस्ता था। परन्तु बीसवीं शताब्दी में बाल्यावस्था को शिक्षा से जोड़ने का रुझान लगातार बढ़ता

[31] Tobias Hecht, ed., *Minor Omissions: Children in Latin American History and Society* (Madison: University of Wisconsin Press, 2002).

रहा, साथ ही माध्यमिक स्तर के बाद शिक्षा देनेवाली संस्थाओं में उपस्थिति की दरें भी बढ़ीं। इसके अनुरूप कानूनों ने भी पहले बाल श्रम और तब किशोर श्रम को प्रतिबन्धित किया। सुधार के युग के आरम्भ होने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के उपायों के उत्सुक क्रियान्वयन के कारण शिशु मृत्यु-दर में कमी आई। आधुनिक बाल्यावस्था का तीसरा चरण, निम्न जन्म दर, और धीमी गति से आया। इसके प्रति सम्पूर्ण सरकारी प्रतिबद्धता द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ही विकसित हुई, और अधिकांश पाश्चात्य समाजों की तुलना में जापान गर्भपात पर काफी लम्बे समय तक बहुत ज्यादा आश्रित रहा।[32]

जैसा कि हम देख ही चुके हैं, आधुनिक बाल्यावस्था के रुझानों को अपनाने में जापान तीनों केन्द्रीय विशेषताओं के परे गया, और वहाँ भी इस संक्रमण के व्यापक निहितार्थ दिखाई दिए। शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने और व्यापक पश्चिमी रुझानों के प्रति जागरूकता ने कई सुधारकों को बाल्यावस्था को अधिक स्पष्टता के साथ जीवन के एक पृथक चरण के रूप में देखने को प्रोत्साहित किया, जो परम्परागत तरीके से भिन्न था। बच्चों को उनकी अनुक्रमिक अधिगम क्षमता (progressive learning capacity) के सन्दर्भ में देखा जाने लगा, जिसमें शिक्षा तथा संज्ञानात्मक विकास के बीच सम्बन्ध पर नए सिरे से ध्यान देना आवश्यक था; और बच्चों को अद्वितीय रूप से संवेदनशील माना जाने लगा। 1874 में ही मित्सुकूरी शुहाई (Mitsukuri Shuhei) ने टिप्पणी की :[33]

> शैशव से तकरीबन छह या सात साल के होने तक, बच्चों के दिमाग बिल्कुल साफ व निष्कलंक होते हैं और उनका चरित्र किसी श्रेष्ठ मोती सा शुद्ध व अमिश्रित। उसके बाद जो कुछ उनकी आँखों या कानों को छूता है, अच्छा या बुरा, उन पर ऐसी गहरी छाप छोड़ता है जो मृत्यु तक मिटाई नहीं जा

[32] Ronald Philip Dore and Reinhard Bendix, *Aspects of Social Change in Modern Japan* (Princeton: Princeton University Press, 1967), विशेषकर अध्याय 3 और 4।

[33] Mitsukuri Shuhei, "On Education," in Merioku Zasshi, *Journal of Japanese Enlightment*, trans. William Braisted (Tokyo, 1976), 106; देखें Platt, "Japanese Childhood."

सकती। यह उम्र उनकी प्रकृति को अनुशासित करने और उन्हें आचरण में प्रशिक्षित करने का सबसे अच्छा अवसर उपलब्ध करवाती है। अगर प्रशिक्षण विधियाँ उचित हों तो वे विद्वान और सदाचारी बनेंगे, पर अगर विधियाँ खराब हों तो बेवकूफ और मतान्ध बनेंगे।

इस दृष्टि से देखें तो पालकों सहित, वयस्कों के उत्तरदायित्व विशाल हैं– जैसा 1876 की एक शिक्षक मार्गदर्शिका ने घोषणा की, "जो आदतों या अच्छे आचरण और अध्यवसाय, या बुरे आचरण और आलस्य को निर्धारित करता है, वह है पालकों व शिक्षकों द्वारा उपलब्ध करवाए गए आचरण के मानक व मॉडल।"[34] इन मान्यताओं ने विशेषज्ञों द्वारा रची गई लालन-पालन मार्गदर्शिकाओं में आस्था बढ़ाई; पालकों की परम्पराएँ व सहजबोध (instincts) अपर्याप्त माने जाने लगे। इसका एक और परिणाम विशेष खेल के मैदान और बाल गतिविधियाँ थे। और जापान ने शीघ्र ही पश्चिम की नकल कर बाल/किशोर अपराधियों के लिए अलग कानून, अलग अदालती प्रक्रियाएँ और दण्ड भी स्थापित किए जो वयस्क अपराधियों के प्रावधानों से भिन्न थे। आधुनिक बाल्यावस्था के बुनियादी संक्रमण के हिस्से के रूप में वहाँ अनेक परम्परागत संकल्पनाएँ दरकिनार कर दी गईं। बेशक, जापान ने बच्चों के प्रति अपने रवैये का पूरा पाश्चात्यीकरण नहीं किया। यहाँ, आधुनिकीकरण और पाश्चात्यीकरण में भेद करना जरूरी है। 1880 के दशक के आने तक जापानी सरकार पूर्ण पाश्चात्यीकरण के किसी भी संकेत से पीछे हटी, और उसने पाश्चात्य शैक्षिक मूल्यों के विपरीत आज्ञापालन व समूह सम्बद्धता के दायित्वों का आग्रह किया।[35] समूह-अभिमुख तौर-तरीकों के भाग के रूप में, शर्मिन्दा करना जापानी लालन-पालन व शिक्षा में पश्चिम की तुलना में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बना रहा। हालाँकि पाश्चात्यवाद के कुछ काट, जैसे सम्राट व राज्य के प्रति निष्ठा को उत्प्रेरित करने का अभ्यास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वहाँ लुप्त या कम हुआ, समूह

[34] Aoki Sukekiyo, quoted in Mark Lincicome, *Principles, Praxis, and the Politics of Educational Reform in Meiji Japan* (Honolulu: University of Hawaii Press, 1995), 37.

[35] Stearns, *Schools and Students*.

के प्रति निष्ठा कायम रही। जापान, बाल्यावस्था के एक पूर्ण व सफल आधुनिकीकरण का ऐसा प्रमुख उदाहरण बना, और आज भी है, जो अपने विशेष लक्षणों को बरकरार रखने के साथ संगति में है।

पश्चिम से इतर, आधुनिक बाल्यावस्था में अन्तरण का दूसरा बड़ा दृष्टान्त, जिसने वैश्विक आबादी के बड़े हिस्से को प्रभावित किया, मार्क्सवादी क्रान्तिकारियों की शिक्षा के प्रति कटिबद्धता का था। यह पहले रूस में, फिर चीन में व अन्यत्र देखा गया। पाश्चात्य संस्थाओं और मूल्यों के प्रति अपने विद्वेष के बावजूद रूसी क्रान्तिकारियों ने इस विचार पर प्रश्न नहीं उठाए कि बाल्यावस्था की वांछनीय स्थिति शिक्षा प्राप्त करना होनी चाहिए। रूसी शिक्षा प्रणाली उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विस्तृत होने लगी थी। क्रान्तिकारी शासन ने औद्योगिक विकास व राजनैतिक उत्थान, दोनों की पूर्व शर्त के रूप में शिक्षा को सार्वजनिक बनाने में कड़ी व प्रभावी मेहनत की। हालाँकि बाल श्रम, खासतौर से किशोर श्रम, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में अवश्य जारी रहा, बहुत से पालक इस विचार को स्वीकारने लगे कि शिक्षा बाल्यावस्था की सामान्य स्थिति है। एक मार्क्सवादी मध्यम या अफसरशाही वर्ग भी उभरा जो अपने बच्चों की स्कूली सफलता के अवसरों को अधिकतम बनाने पर आमादा था। सरकार ने बाल मृत्यु दरों को कम करने के प्रयासों का भी समर्थन किया, और इसमें भी उसे काफी सफलता हासिल हुई। 1920 के दशक में जन्म दरों पर व्यापक बहसें हुईं, महिलाओं के अनेक समूहों ने उसे नियंत्रित करने का दबाव डाला। 1930 के दशक में स्टालिनवादी सरकार अधिक जन्म का पक्ष लेने वाली नीति की ओर लौटी। पर एक औद्योगिक समाज की माँगों ने, जिसमें शिक्षा पर व्यय और काम को सीमित करने का आग्रह शामिल थे,

रूस को भी पश्चिम की ही दिशा में धकेला, और जन्म दरें तेजी से घटीं। यहाँ भी, जापान की ही तरह, गर्भपात पर काफी निर्भरता रही।[36]

1949 के बाद चीन भी इसी दिशा में बढ़ा। सस्ते श्रम के भारी शोषण के बावजूद, बच्चों को अधिकाधिक संख्या में स्कूल भेजा जाने लगा, कम से कम किशोरावस्था तक। आधुनिक अर्थव्यवस्था को निर्मित करने के तहत कौशलों को बेहतर बनाने की आवश्यकता तथा मार्क्सवादी सिद्धान्तों में शिक्षित करने के अवसरों की अनदेखी नहीं की जा सकती थी। माओ त्सेतुंग के दौर में जन्म दर की नीतियों पर प्रशासन दोलक की तरह आगे-पीछे झूलता रहा, पर 1970 के दशक के अन्त में उसने बच्चों की संख्या सीमित करने की एक नाटकीय नीति को चुना, जिसमें एक से अधिक बच्चे वाले परिवारों पर अर्थ दण्ड लगाया गया।[37] इस नीति के परिणाम रोचक थे। इस नीति से सम्भवतः बालिका शिशु हत्या में बढ़ोतरी हुई, क्योंकि बच्चों की संख्या पर पाबन्दी के बावजूद परिवार परम्परागत रूप से प्रबल पुत्र लालसा का अनुसरण करते रहे। इसमें सन्देह नहीं कि चीनी अनाथालयों में बालिकाओं की संख्या का अनुपात लड़कों की तुलना में आठ गुना अधिक था– यह प्रबल पुत्र लालसा व्यापक आधुनिक रुझान में विशिष्ट चीनी पेंच था। अन्य नतीजे दूसरे स्थानों के समान थे : प्रति परिवार कम बच्चों के कारण बच्चों से भावनात्मक लगाव और उनके प्रति आसक्ति में बढ़ोतरी हुई, जिसमें (संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार) बच्चों के लिए उपहार भी शामिल थे। जाहिर है कि चीन में बाल्यावस्था का आधुनिकीकरण केवल औपचारिक नियमों व ढाँचों का मसला नहीं था।

---

[36] Ansley Coale, Barbara Anderson, Ernie Harris, eds., *Human Fertility in Russia since the Nineteenth Century* (Princeton: Princeton University Press, 1979); Daniel Hoffmann, "Mothers in the Motherland: Stalinist Pronatalism in its Pan- European Context," *Journal of Social History* 34 (2000): 35-54.

[37] James Lee and Wang Feng, *One Quarter of Humanity: Malthusian Mythology and Chinese Realities, 1700-2000* (Cambridge, MA: Harvard University Press, 1999).

बच्चों के प्रति मार्क्सवादी रवैये ने एक और विशेषता को रेखांकित किया जो पश्चिमी तथा जापानी तौर-तरीकों में दिखाई देने के बावजूद उतनी प्रमुख नहीं थी : युवा समूहों के गठन के प्रति जोशीला समर्पण। साम्यवादी युवा संगठन न केवल युवावस्था के महत्त्व वरन उनकी विशिष्टता को भी स्वीकारने के लिए गठित किए गए। साथ ही इन संगठनों ने युवाओं को औपचारिक शिक्षा की माँगों के परे जा उन्हें मार्क्सवादी विचारधारा में दीक्षित किया और उनकी ऊर्जा को अनुशासित किया।[38] युवावस्था के प्रति इस प्रशंसात्मक पर निगरानी रखने के तरीके का पूर्वानुभव पश्चिम में विकसित स्काउटिंग जैसे आन्दोलनों द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से हो चुका था। युवाओं को उत्प्रेरित करने के फासीवादी तरीके में भी युवा समूह महत्त्वपूर्ण रहे। इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में, आंशिक रूप से फासीवाद और तब साम्यवाद की अवनति के चलते, युवावस्था के प्रति यह संगठनात्मक तरीका वैश्विक स्तर पर कुछ कमजोर पड़ा, फिर भी यह एक रोचक घटना है जिसकी पुनरावृत्ति होती रहती है।

शिक्षा तथा बेहतर स्वास्थ्य उपचार के प्रति मार्क्सवादी प्रतिबद्धता ने बाल्यावस्था को न केवल रूस व चीन में, बल्कि पूर्वी यूरोप, वियतनाम, क्यूबा और अन्यत्र भी रूपान्तरित किया। साम्यवाद द्वारा आरम्भ या उत्प्रेरित किए गए बदलाव स्वयं साम्यवाद के फीके पड़ने के साथ गायब नहीं हुए। बेशक कई अन्य देश, जैसे मिस्र या ईराक, अरब राष्ट्रवाद के तहत शिक्षा को प्रोत्साहित करने लगे, या किसी अन्य आधुनिक विचारधारा के तहत उसी दिशा में बढ़ने लगे। हालाँकि उनकी गति इतनी नाटकीय नहीं थी। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में जैसे-जैसे लड़कों और लड़कियों दोनों की शिक्षा तक पहुँच बढ़ी, बाल श्रम की दरें वैश्विक स्तर पर लगातार घटती गईं, हालाँकि बेशक इसमें भारी क्षेत्रीय अन्तर भी थे। (और इन अन्तरों के बावजूद, 2003 तक कुछ समानताएँ

[38] Lisa Kirschenbaum, *Small Comrades: Revolutionizing Childhood in Soviet Russia, 1917-1932* (New York: Routledge Falmer, 2001); David Macleod, *Building Character in the American Boy: The Boy Scouts, the YMCA, and Their Forerunners, 1870-1920* (Madison: University of Wisconsin Press, 1983).

भी नजर आने लगीं थीं। ईरान में विश्वविद्यालयी छात्रों में 60 प्रतिशत महिलाओं का था, जो लगभग अमरीका के समान है।) यही रुझान बाल मृत्यु दरो में सुधार तथा जन्म दरों में कमी में भी नजर आया : समग्र वैश्विक रुझान आज आधुनिक मॉडल की दिशा में अग्रसर होता दिखता है, हालाँकि विभिन्न क्षेत्र अलग-अलग समय पर और पृथक गति से बढ़ रहे हैं।[39]

बाल्यावस्था का वैश्वीकरण दरअसल विश्व में सभी प्रमुख क्षेत्रों के बीच लगातार जटिल होती जा रही अन्तर्क्रियाओं का परिणाम था। इस वैश्वीकरण के निहितार्थों के कारण बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, बल्कि उसके भी कुछ पहले ही, परिवर्तन के बुनियादी रुझान में कुछ पूरक तत्व जुड़े, तथा वह और अधिक पेचीदा भी हुआ। इस प्रक्रिया के तीन पक्ष थे, जो संयोगवश आधुनिकीकरण के विस्तार के रुझान के साथ-साथ काम कर रहे थे, और एक मामले में तो इनसे प्रक्रिया में प्रत्यक्ष (हालाँकि काफी मन्द) सहायता भी मिली।

इनमें पहला बिन्दु था अन्तरराष्ट्रीय श्रम कार्यालय (International Labour Organisation- ILO) तथा बाल परोपकार संस्थाओं सहित विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं के तत्वावधान में बच्चों के सम्बन्ध में वैश्विक मानकों का प्रसार। 1920 के ही दशक में ILO ने ऐसे कदमों पर चर्चा शुरू कर दी थी जो विश्व भर में बाल श्रम को सीमित कर सकें, इस समझ के आधार पर कि इससे स्कूल के लिए समय निकलेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, ILO व संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न एजेन्सियों ने इस पर इस आग्रह के साथ दबाव डाला, कि बाल्यावस्था की पुनर्परिभाषा मूलभूत अधिकारों का मसला है। इन एजेन्सियों ने शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए भी कड़ी मेहनत की, और 1990 के दशक तक संयुक्त राष्ट्र संघ ने जन्म दर घटाने पर सम्मेलन प्रायोजित किए (इस पर रोमन कैथलिक चर्च व मुस्लिम राष्ट्रों की हिचक के बावजूद, आम सहमति थी। यह

[39] Wolf Schaefer, "Global Patterns in Childhood," *Journal of Social History* 38 (2005): forthcoming.

भी स्वीकारा गया कि इस दिशा में सबसे महत्त्वपूर्ण कदम महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करना है)।[40] युनेस्को (UNESCO) जैसे संगठनों ने विभिन्न सूचनात्मक प्रयास प्रायोजित किए, जिसमें मध्य पूर्व जैसे स्थानों में विज्ञापन अभियान भी शामिल थे, जो पालकों को बच्चों को शिक्षित करने और उन पर व्यक्तियों के रूप में नई तरह से ध्यान देने का आग्रह कर रहे थे। दूसरे शब्दों में कहें, तो बाल्यावस्था का आधुनिकीकरण, अपने सभी आयामों में, एक वैश्विक उद्यम बन चला था।[41]

बेशक, इन प्रयासों की सीमाएँ थीं। सबसे जाहिर सीमा तो यही थी, कि तमाम लोग, खासकर ग्रामीण इलाकों के लोग इन प्रयासों से अछूते रहे, और दूसरों ने परम्परा के नाम पर बुनियादी बदलावों का विरोध किया। ऐसे भी लोग थे जो द्वन्द्व में उलझ गए– एक ओर तो उन्हें लगता था कि लालन-पालन में पाश्चात्य मॉडलों के साथ नवाचार, सम्भवतः उनके बच्चों की सफलता को प्रोत्साहित करेगा, पर वे व्यक्तिवादी एजेंडा के बदले पालकों के नियंत्रण और पारिवारिक निष्ठा को बनाए रखने को भी आतुर थे।[42] यह अनुमान लगाना कठिन है कि वैश्विक अभियानों का प्रभाव कितना पड़ा, परन्तु बाल श्रम, जन्म व मृत्यु दरों में लगातार आई कमी कुछ सफलता अवश्य सुझाती है। दूसरी सीमा का सम्बन्ध स्वयं वैश्विक आन्दोलन में नजर आने वाली चौंकाने वाली झिझकों से है। 1973 में ILO ने एक नया प्रस्ताव रखा जिसमें सोलह वर्ष से कम आयु में बाल श्रम को प्रतिबन्धित करने की माँग की गई। इसे बाल अधिकारों का तार्किक विस्तार कहा गया। पर इस विचार को पर्याप्त अन्तरराष्ट्रीय समर्थन नहीं मिला : कुछ देश, जैसे संयुक्त राज्य

---

[40] United Nations, *Report of the International Conference on Population and Development* (Cairo, 1994).

[41] Peter N. Stearns, *Global Outrage: The Origins and Evolution of World Opinion* (London: OneWorld, forthcoming); Saud Joseph, "Childhood, Citizenship, and Globalization in Lebanon," *Journal of Social History* 38 (2005): forthcoming.

[42] Saud Joseph, "Childhood, Citizenship, and Globalization in Lebanon"; Peter N. Stearns, "Conclusion: Change, Globalization and Childhood," *Journal of Social History* 38 (2005): forthcoming.

अमरीका, ने इस प्रकार के अन्तरराष्ट्रीय दायित्व से भयभीत होकर बाल श्रम के बचाव की कोशिश की, खासतौर से अप्रवासी (और विदेशी) कृषि श्रमिकों के सन्दर्भ में; अन्य देशों का मानना था कि बाल श्रम राष्ट्रीय व पारिवारिक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यावश्यक है। बाल्यावस्था का सम्पूर्ण आधुनिक मॉडल, कम से कम किशोरावस्था के स्तर तक, अभी भी वैश्विक स्वीकृति के लिए तैयार नहीं था। बीसवीं शताब्दी के अन्त में ILO कुछ पीछे हटा और उसने अपने प्रयास एक अधिक सीमित, परन्तु महत्त्वपूर्ण पक्ष, बाल यौन शोषण, पारिवारिक कर्ज चुकाने के लिए या किसी अन्य कारण से बच्चों को बन्धुआ बनाना, या सैन्य सेवा जैसे बाल श्रम के सबसे निकृष्ट स्वरूपों के उन्मूलन पर केन्द्रित किए। अधिकांश राष्ट्रों ने इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए। हालाँकि संयुक्त राज्य अमरीका ने ऐसा नहीं किया, अंशतः इस कारण कि वह सम्प्रभुता से किसी प्रकार का समझौता करने के विरुद्ध था। बाल अधिकारों के लिए वैश्वीकरण एक वास्तविक बल था, तीसरी दुनिया के बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए लोकोपकारी प्रयास इसके पूरक बने, पर इसकी भी कुछ सीमाएँ थीं।

बच्चों पर वैश्वीकरण का जो दूसरा प्रभाव था, दुर्भाग्य से उसका सम्बन्ध आधुनिकीकरण की वृहत्तर परियोजना और बाल अधिकारों के नए आन्दोलन से था। वैश्विक अर्थव्यवस्था ने बाल श्रम के नए अवसर व आवश्यकताएँ पैदा कीं। इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में फल-फूल रही बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में विश्व के कुल बाल श्रम का केवल 5 प्रतिशत ही नियुक्त था। पर अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन की स्पर्धा ने उत्पादन की अनेक परम्परागत शाखाओं को भंग किया, जिससे बेरोजगारी और गरीबी बढ़ी। इसके परिणामस्वरूप यह सम्भावना भी बढ़ी कि परिवार बाध्य हो कर अपने बच्चों को काम करने की दिशा में धकेलें, इसमें सड़क की गतिविधियाँ (street activities) जैसे छोटे-मोटे अपराध, और बालिकाओं के लिए यौन (sex) की बिक्री शामिल थे। 1990 के दशक तक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund - IMF) जैसी अन्तरराष्ट्रीय संस्थाएँ मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के हित में गरीब परिवारों के लिए सामाजिक भुगतान सम्बन्धी

राजकीय व्यय को सीमित करने का दबाव डालने लगीं। इसने भी बाल श्रम के उपयोग के प्रयासों को बढ़ावा दिया। फलतः ब्राज़ील जैसे शहरों में बाल श्रम कायम रहा। ब्राज़ील में सड़कों पर रहने वाले ऐसे बच्चों की बहुतायत थी, जिनके परिवार गरीबी के कारण उनकी नियमित देखभाल नहीं कर सकते थे, और जो विविध प्रकार के काम कर जीवित रहने की कोशिश करने के साथ अपने पालकों के लिए भी कुछ बचाने की कोशिश करते थे। इसके अलावा एक प्रमुख क्षेत्र दक्षिण व दक्षिणपूर्वी एशिया में व्यापक वैश्विक रुझान के विपरीत, बाल श्रम की दर दरअसल काफी बढ़ी। आर्थिक दबाव और बाल श्रम के प्रति पारिवारिक व सामाजिक रवैये ने मिलकर इसके क्षेत्रीय अन्तर को कायम रखा। यह बाल्यावस्था के आधुनिक रुझान के प्रति पूर्ण वैश्विक कटिबद्धता के विचार को चुनौती देता रहा।[43]

बाल्यावस्था और किशोरावस्था पर वैश्वीकरण के तीसरे प्रभाव का सम्बन्ध वैश्विक उपभोक्तावाद की लहर से था, जिसमें बच्चे और खासतौर से किशोर, एक प्रमुख भूमिका निभा सकते थे। जैसा आधुनिकीकरण के साथ हुआ था, यहाँ भी बच्चों को उपभोक्तावाद से जोड़ने के पहले कदम पश्चिम में ही उठे। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आते-आते बच्चे स्वयं चीजें खरीदने लगे थे– उदाहरण के लिए अमरीका में उन्हें जेब-खर्च देने का प्रचलन स्थापित हो चला था; कुछ किस्म की खाने-पीने की चीजें और रोचक पठन सामग्री उपलब्ध होने लगी थी, जिसमें लड़कों के लिए पाश्चात्य या जासूसी कहानियाँ शामिल थीं (जल्द ही इनमें कॉमिक्स भी जुड़े)। अकसर पालक इनसे दुखी होते और पलटकर अपने बच्चों के लिए दूसरी तरह की उपभोग की वस्तुएँ खरीदते। व्यावसायिक कम्पनियाँ बच्चों को बाजार के रूप में देखने लगीं; 1920 के दशक तक बच्चों को लक्षित रेडियो

[43] Elizabeth Kuznesof, "The House, the Street, Global Society: Latin American Families and Childhood in the Twenty-First Century," *Journal of Social History* 38 (2005): forthcoming; Jeremy Seabrook, *Children of Other Worlds: Exploitation in the Global Market* (London: Pluto Press, 2001).

कार्यक्रमों में इस धारणा के आधार पर और उसे पुष्ट करते हुए, विभिन्न उत्पादों के लुभावने विज्ञापन शामिल हो चले।[44]

कुछ तरह के पाश्चात्य उत्पाद अन्य समाजों के किशोरों को आकर्षित करने लगे।[45] 1920 व 30 के दशक तक लेबनान के शहरी किशोर काफी नियमित रूप से पश्चिम की फिल्में देखने लगे। पर बाल उपभोक्तावाद का सम्पूर्ण वैश्विक विस्फोट बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तब हुआ, जब नई तकनीक और बाजार अवसर उपलब्ध हुए। तमाम नए बाजार ऐसे थे जिनसे हम आज बखूबी परिचित हैं, पर इस परिचय की आड़ में उनका बुनियादी नयापन और महत्त्व छिपना नहीं चाहिए। किशोर फास्टफूड रेस्त्राओं के ग्राहक बने, अकसर अपने पालकों को नाराज करते हुए जो इन नए चस्कों के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य भी था। सैसमी स्ट्रीट जैसे टीवी कार्यक्रम प्रमुख भाषाओं में अनुवादित होने लगे। इन कार्यक्रमों ने बच्चों के लिए नए मानक स्थापित किए। एमटीवी और रॉक संगीत की वैश्विक यात्राओं ने युवा वर्ग को संगीत की एक साझी भाषा दी। शहरी युवाओं के लिए वस्त्र अनेक स्थानों में, अकसर वयस्कों व परम्परागत वेशभूषा के विरुद्ध, मानकीकृत होने लगे। थीम पार्कों ने पालकों को अपनी आर्थिक सफलता और बच्चों के प्रति प्रेम को एक ही साथ उपभोक्तावादी कृत्यों द्वारा दर्शाने के नए मानक उपलब्ध करवाए : बच्चों को ऑरलैण्डो ले जाना उनकी उम्दा देखभाल सिद्ध करने की प्रथा बन चला, खासतौर से सफल लातीनी अमरीकी पालकों में। यही वह सन्दर्भ था जिसमें डिजनी चरित्र और बार्बी डॉल वैश्विक स्तर पर बच्चों के खेल-खिलौनों का हिस्सा बने, और ब्रिटनी स्पीयर्स जैसे प्रतीक वैश्विक दर्जा हासिल कर सके। कुछ

---

[44] Lisa Jacobson, *Raising Consumers: Children and Consumer Society in the Early Twentieth Century* (New York: forthcoming); Susan Matt, "Children's Envy and the Emergence of the Modern Consumer Ethic," *Journal of Social History* 36 (2002): 283-302; Zelizer, *Pricing*.

[45] Peter N. Stearns, *Consumerism in World History: The Global Transformation of Desire* (London: Routledge, 2001); Tracey Skelton and Gill Valentine, eds., *Cool Places: Geographies of Youth Cultures* (London: Routledge, 1998); John Love, *McDonald's: Behind the Arches*, rev. ed (New York: Bantam Books, 1995).

विश्सनीयता के साथ, कुछ अवलोकनकर्ता यह दावा करने लगे कि एक वैश्विक युवा संस्कृति अस्तित्व में आ चुकी है।[46]

यह समझना बेहद जरूरी है कि यह संस्कृति पूरी तरह पाश्चात्य स्रोतों पर आधारित नहीं थी। जापान, और कुछ कम हद तक कुछ अन्य देश भी रचनात्मक केन्द्र बने। जापान विश्व भर में छोटे बच्चों की 'क्यूट' छवियों और उत्पादों को प्रोत्साहित करने के लिए मशहूर हुआ, जो न केवल शैशव की नई अवधारणा पर आधारित था, बल्कि जिसने नई अवधारणाओं को भी उत्प्रेरित किया। हैलो किटी श्रृंखला की पगलाई सी लोकप्रियता इसकी एक अभिव्यक्ति थी। जापान 'यूथ कूल' की विभिन्न शैलियों और उत्पादों में भी अगुवाई करने लगा, और सन 2003 के आते-आते, आय के सन्दर्भ में 'कूल' निर्यात जापान की सूची में सबसे ऊपर थे। *वायर्ड* नामक पत्रिका ने युवा जापानी महिलाओं द्वारा प्रयुक्त उत्पादों को वैश्विक रुझानों के अग्रदूतों के रूप में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया।[47]

वैश्विक उपभोक्तावाद से, युवाओं, और कुछ कम हद तक बच्चों ने भी कई क्षेत्रों में एक पृथक पहचान व सामूहिक जुड़ाव हासिल किया। हांगकांग के एक युवक से जब पूछा गया कि वह मैकडोनाल्ड्स में क्यों जाता है तो उसने कहा कि उसे वहाँ का भोजन खास पसन्द नहीं है पर उसे वहाँ सब कुछ देखना और खुदद वहाँ दिखना बेहद अच्छा लगता है।[48] स्पष्टतः, नई शैलियों (styles) ने युवाओं को पालकों के पूर्ण नियंत्रण को स्वीकारने के विकल्प उपलब्ध करवाए; इस अर्थ में उपभोक्तावाद सत्ता के संघर्ष में एक वास्तविक अस्त्र हो सकता था। परिवार के वयस्क

---

[46] Skelton and Valentine, *Cool Places*.

[47] Gary Cross, *The Cute and the Cool: Wondrous Innocence and Modern American Children's Culture* (New York: Oxford University Press, 2004).

[48] Stearns, *Consumerism*, 90-91.

सदस्यों सहित, व्यापक समाजों को नेतृत्व प्रदान कर उन्हें उपभोग की दिशा में बढ़ाने का बच्चों को एक अभूतपूर्व अवसर मिला, यह एक नाटकीय नई भूमिका थी। साथ ही, उपभोक्तावाद ने वयस्क दायित्वों को भी प्रभावित किया। बीसवीं शताब्दी के किसी बिन्दु पर, अधिकाँश स्थानों में पालक यह मानने लगे कि अपने बच्चों को आनन्दित करने के लिए वस्तुएँ उपलब्ध करवाना उनकी भूमिका का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, और जब वे ऐसा नहीं कर पाते तो उन्हें अपराधबोध का अनुभव होता। 'हैप्पी बर्थडे' गीत की अमरीकी तुकबन्दी लगभग सभी प्रमुख भाषाई क्षेत्रों में अनुवादित हुई और अपनाई गई, जो बच्चों से पालकों के तादात्म्य के वैश्विक रूपान्तरण का एक सम्मोहक उदाहरण है।

बेशक, उपभोक्तावाद कई तरीकों से आधुनिकीकरण के व्यापक एजेंडा में भी घुलामिला नजर आ सकता था। उदाहरण के लिए जन्मदिनों के आयोजनों में बच्चों को व्यक्तिगत उपहार देने को या उन्हें स्वयं खरीदारी करने देने को स्वीकारा जाने लगा। यह शिक्षा के माध्यम से बच्चों की व्यक्तिगत पहचान और उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने का प्रतिरूप हो सकता था। सबसे जाहिर यह था कि उपभोक्तावाद शिक्षा को स्वीकारने की इच्छा का नया पुरस्कार बना। उपभोक्तावाद ने आधुनिक बाल्यावस्था की समकक्ष (peer) समूह व आयु के अनुसार वर्गीकृत विशेषताओं को अधिक स्पष्ट आकार भी दिया। दूसरी ओर, बाल उपभोक्तावाद की कुछ ऐसी अनूठी विशेषताएँ भी थीं जो आधुनिकीकरण के मॉडल का अब तक हिस्सा नहीं रही थीं, और जो इस मॉडल के कुछ आयामों से टकराव भी उत्पन्न कर सकती थीं। उदाहरण के लिए, जब किशोर/युवा स्कूल में मेहनत करने या वहाँ उपस्थित तक रहने के बनिस्बत उपभोगवादी हितों को चुनते– इस टकराव को संयुक्त राज्य अमरीका से लेकर मैडागास्कर तक के व्यक्तिगत मामलों में देखा जा सकता था।[49]

[49] Cole, "Jaombilo."

अर्थात वैश्वीकरण ने बाल्यावस्था में आ रहे परिवर्तन के बुनियादी रुझान में अनेक विशेषताएँ, जटिलताएँ, और कुछ नई क्षेत्रीय भिन्नताएँ जोड़ीं। यह प्रक्रिया लगातार जारी है, अतः बदलती बाल्यावस्था को एक बीत चुके ऐतिहासिक मामले के रूप में देखना जल्दबाजी होगी। यह भी निश्चित नहीं है कि वैश्वीकरण के सहयोगी तामझाम सहित आधुनिकीकरण का मॉडल हर जगह विजयी भी होगा : बाल श्रम वह परिवर्तनशील घटक है जो संसाधनों के बेहद विभिन्न स्तरों के व्यापक मुद्दे से जुड़ा है। बाल्यावस्था के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न परम्पराएँ हैं– जिनमें जेंडर व यौनिकता के पक्ष भी शामिल हैं– जो न केवल आधुनिकीकरण के आयामों का, वरन उपभोक्तावाद के निहितार्थों व वैश्विक अधिकारों के कुछ पक्षों का भी विरोध करती हैं। हम जापान के उदाहरण तथा अन्य उदाहरणों से जानते हैं कि जहाँ परिवर्तन के साझे रुझान स्थापित हैं, वहाँ भी वे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय रूपान्तरों से मिले-जुले होंगे– अतः यह आवश्यक है कि हम एक झूठी समरूप छवि से बचें।

एक दूसरा ऐतिहासिक निष्कर्ष भी अत्यावश्यक है, हालाँकि हम जिस सांस्कृतिक प्रगति के दौर में हैं उसमें इसे आत्मसात करना बेहद कठिन है : बाल्यावस्था की प्रकृति में आए बदलाव समान रूप से हितकर नहीं रहे हैं। बेशक, उस स्थिति में लौटने की कल्पना नहीं की जा सकती जिसमें कई बच्चे वयस्क बनने के पहले ही मर जाते थे और जिसमें कठोर शारीरिक परिश्रम तथा, अकसर अत्याचारपूर्ण अनुशासन अनियंत्रित रहता था। पर आधुनिक बाल्यावस्था ने भौतिक कष्ट और उत्पीड़न को समाप्त नहीं किया है। कई क्षेत्रों में पहले की तुलना में अब बच्चे नीतिगत सरोकारों में उतनी प्रमुखता पाते भी नजर नहीं आते, अंशतः परिवर्तित होते आयु ढाँचों के चलते जो बच्चों की संख्या को सीमित करते हैं और वृद्धों की संख्या को प्रोत्साहित करते हैं। आधुनिक बाल्यावस्था के साथ बचपन के अर्थ और पहचान सम्बन्धी अपने सरोकार भी उभरे हैं जो निश्चित रूप से परम्परागत परिस्थितियों की तुलना में युवाओं में अधिक मनोरोगों और आत्महत्या की दिशा में ले जा रहे हैं। बाल्यावस्था के आधुनिक इतिहास के प्रति गम्भीरता से जागरूक होने का एक कारण

है परिवर्तन के फलस्वरूप उभरी समस्याओं की ओर कल्पनाशील तरीकों से ध्यान आकर्षित करना। होता अकसर यह है कि अगर बाल्यावस्था को इतिहास से पूरी तरह हटाया न भी जाए, तो भी उस पर प्रगति सम्बन्धी अनुचित धारणाओं का मीठा लेप चढ़ा दिया जाता है, मानो नेकनीयत और आलंकारिक भाषा उसका वर्णन कर सकते हैं जो मूलतः एक जटिल ऐतिहासिक प्रक्रिया थी और आज भी है।

बेशक कई बिन्दुओं पर युवा स्वयं भी अपनी आधुनिक परिस्थिति के आयामों का विरोध करते प्रतीत होते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिम में वामपंथी व दक्षिणपंथी राजनीतिक अभियानों से जुड़ने वाली एक श्रेणी युवाओं की थी। अनेक अवसरों पर छात्रों के समूहों ने आधुनिक विरोधों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[50] 1960 के दशक में समूचे पश्चिम में व्याप्त एक युवा आन्दोलन विकसित हुआ जिसमें उपभोक्तावाद तथा उच्च शिक्षा में नजर आने वाली कुछ अनिश्चितताओं व पदानुक्रमों (hierarchies) को लक्षित किया गया था। समसामयिक विरोधों में, जिसमें मुस्लिम विरोध भी शामिल हैं, युवा वर्ग की भूमिका पर अकसर गौर किया गया है। परन्तु एक टिकाऊ वैश्विक युवा विरोध विकसित नहीं हो सका है। 1960 के दशक का आन्दोलन काफी निश्चयात्मक रूप से 1973 में समाप्त हुआ, और कई पश्चिमी देशों में युवा वर्ग की राजनीतिक गतिविधियों में दृश्य व नुक्सानदेह रूप से कमी आई। उपभोक्तावाद का आकर्षण और शैक्षिक उपलब्धियों पर ध्यान केन्द्रित होने के साथ जारी सांस्कृतिक विभाजन, बदलाव के कुछ दुष्प्रभावों पर सामूहिक प्रतिक्रिया करने की युवाओं की क्षमता को सीमित करते प्रतीत होते हैं। यह स्थिति वैश्विक अनुभव की इस मुख्य श्रेणी पर फिर से सामाजिक व नीतिगत ध्यान देने का एक और आमंत्रण है।

[50] Kenneth Keniston, *Youth and Dissent: The Rise of a New Opposition* (New York: Harcourt Brace Javanovich, 1971).